Philosophy
BA I Hons
&
Subsidiary

चार्वाक का तत्त्व विज्ञान
Metaphysics or Materialism

चार्वाक का तत्त्व विज्ञान मूलतः उसके प्रमाण विज्ञान पर आधारित है जिसके अनुसार प्रत्यक्ष ही ज्ञान प्राप्त करने का साधन है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जिन विषयों का प्रत्यक्षीकरण होता है उसी को वास्तविक या यथार्थ माना जा सकता है। प्रत्यक्ष केवल भौतिक पदार्थों का ही संभव होता है। अतः चार्वाक भूत या जड़ (Matter) को ही मूलतत्त्व (Ultimate Reality) मानता है। इसीलिए चार्वाक के दर्शन को भौतिकवाद (Materialism) भी कहा जाता है।

किसी भी तत्त्व मीमांसा में मुख्य रूप से विषय विश्व (World or Nature) आत्मा (Soul) और ईश्वर (God) के बारे में अध्ययन किया जाता है। जहाँ पर तीनों के बारे में चार्वाक का अलग-अलग मत प्रस्तुत किया गया है। जो इस प्रकार है।

विश्व संबंधी विचार के प्रस्तुतीकरण में यहाँ अन्य भारतीय दर्शन विश्व की उत्पत्ति में पृथ्वी (Earth), जल (water), वायु (Air), अग्नि (fire) तथा आकाश (Ether) को संयोग मानते हैं वहीं चार्वाक आकाश को छोड़कर अन्य चार तत्वों पृथ्वी, जल, हवा और अग्नि को ही विश्व का निर्माणक तत्त्व मानता है। आकाश को विश्व के निर्माण में सहायक नहीं मानता। आकाश का ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्षीकरण नहीं होने के कारण उसका निषेध करता है। चार्वाक के अनुसार उपर्युक्त चारों तत्त्व (Elements) भौतिक तत्त्व हैं। विश्व का विकास इन्हीं चारों तत्वों में होता है और इन्हीं चारों तत्वों से विश्व का सृजन भी होता है तथा इन उपर्युक्त चारों तत्वों का ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्षीकरण होता है।

PAGE NO:
DATE:

भारतीय दर्शन सृष्टिकर्ता (Creation) में विश्वास नहीं करता। यह विश्व के सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर को मानने से इन्कार करता है। विश्व की सृष्टि में प्रकृति को एक प्राकृतिक नियम मानते हुए इसके दर्शन को प्रकृतिवादी तथा यंत्रवादी भी कहा जाता होगा इसलिए कि विश्व प्रक्रिया में कोई प्रयोजन (purpose) दिखाई नहीं पड़ता।

आत्मा संबंधी विचार के प्रदर्शन में जहाँ अन्य भारतीय दर्शन आत्मा को शरीर से पृथक एक आध्यात्मिक सत्ता मानते हैं तथा इनके अनुसार शरीर नश्वर है किन्तु आत्मा नित्य है अमर है, गीता में कहा गया है :—

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।"

अर्थात् न तो शस्त्र काट सकते हैं, न वायु सुखा सकती है, और न पानी भिगो सकता है और न अग्नि जला सकती है। जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्रों का त्याग कर नया वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा जीर्ण शरीर का परित्याग कर नूतन शरीर धारण करती है। शंकर ने तो आत्मा को ब्रह्म कह डाला है लेकिन चार्वाक अन्य भारतीय दर्शनों के विचार को कि आत्मा को शरीर से पृथक नहीं मानता बल्कि शरीर युक्त चैतन्य युक्त शरीर को ही आत्मा कहा है। चैतन्यविशिष्ट देहमेव आत्मा। जबकि वास्तव में भारतीय विचारक चैतन्य को आत्मा का गुण मानते हैं। चार्वाक चैतन्य के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं क्योंकि इसका ज्ञान आत्मा प्रत्यक्षीकरण से होता है किन्तु इनके अनुसार चैतन्य आत्मा का गुण नहीं हो सकता बल्कि शरीर का गुण हो सकता है।

यहाँ प्रश्न उठता है कि भौतिक तत्वों से निर्मित शरीर में चेतना का संचार कैसे होता है? सब इनमें से किसी में पूर्ण में चेतना का अभाव पाया जाता है। चार्वाक उपर्युक्त प्रश्न का समाधान एक उपमा के सहारे देना चाहते हैं। जिस प्रकार कत्थी, चूना और पान में ~~से~~ लाल का रंग का अभाव पाया जाता है उसी प्रकार भौतिक तत्वों में चेतना का अभाव पाया जाता है और इन्हीं से चेतना का प्रकट भाव हो जाता है। इस तरह आत्मा और शरीर के बीच अभेद मानने को अथवा चार्वाक के आत्मा संबंधी विचार को देहात्मवाद (The theory of the identity of soul & body) कहा जाता है जिसकी पुष्टि में चार्वाक ने अनेक तर्क का सहारा लिया है जो निम्न हैं।

(i) दैनिक जीवन में व्यक्ति को मिलता है कि मैं अन्धा हूँ, मैं लंगड़ा हूँ, मैं मोटा हूँ, मैं काला हूँ इत्यादि। यह कथन निश्चित है आत्मा और शरीर का तादात्म्य (Identity) सिद्ध करता है। अतः आत्मा और शरीर में पृथकता स्वीकार करने पर दैनिक जीवन के इन कथनों का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

(ii) चार्वाक के अनुसार जन्म के पूर्व और मृत्यु के पश्चात आत्मा के अस्तित्व को कोई आधार नहीं दिखलाई पड़ता। जब तक शरीर चलायमान है तब तक चेतना रहती है। शरीर के नष्ट होने पर चेतना भी लुप्त हो जाती है। शरीर से परे ~~चेतना का~~ आत्मा का प्रत्यक्ष नहीं ~~होता है~~ हो पाता। इन आधारों पर चार्वाक शरीर को आत्मा से अभिन्न मानता है। इस प्रकार चार्वाक चैतन्य शरीर को आत्मा मानता है। आत्मा शरीर की भाँति नश्वर एवं मरणशील है।

चार्वाक ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण के अभाव ईश्वर के अस्तित्व को ~~इस~~ अस्वीकार करता है।